भारत-नेपाल और दक्षेस

डॉ. हिमाँशु मिश्र

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस
एल-9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.in

भारत-नेपाल और दक्षेस

Bharat-Nepal aur Dakshes
by Dr. Himanshu Mishra

आईएसबीएन : 978-81-19098-48-4
सर्वाधिकार : © डॉ. हिमाँशु मिश्र
संस्करण : प्रथम, 2025, मार्च 10

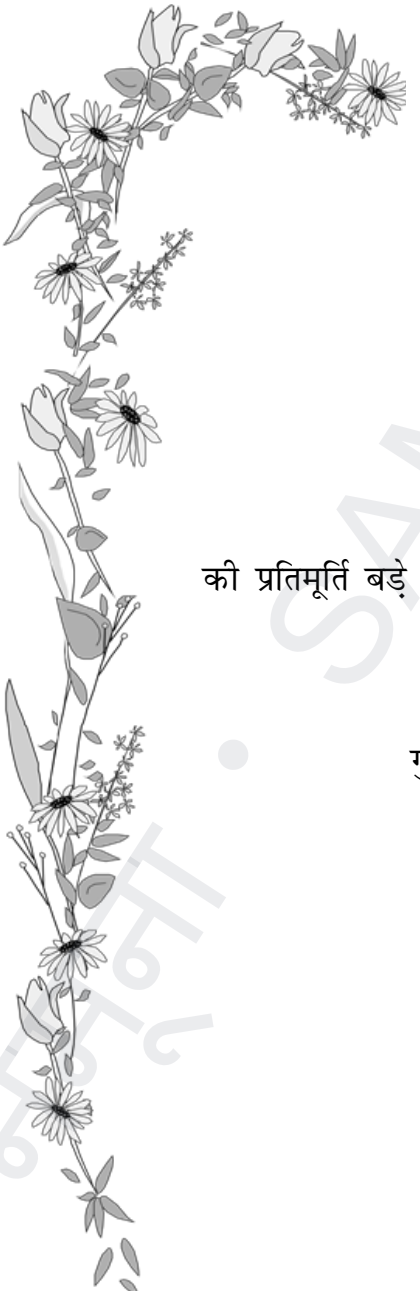
सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE COPY



समर्पण

परम् पूजनीय, उत्साह एवं
प्रेरणा
की प्रतिमूर्ति बड़े पिताजी श्री दुर्गा प्रसाद मिश्र
(पूर्व प्राचार्य), माता-पिता
एवं
गुरुजनों के चरणों में समर्पित



SAMPLE

नमूना • SAMPLE

भूमिका

दक्षिण एशिया के पड़ोसी देशों में, भारत की मूल संस्कृति किसी न किसी तरह से जुड़ी हुई है, चाहे वह भाषा, सामाजिक सांस्कृतिक या पौराणिक संबंध हो, इस दक्षिण एशियाई देशों में भारत के साथ नेपाल की निकटता और एकरूपता प्राचीन काल से जुड़ी हुई है, जो अतुलनीय है। नेपाल, एक हिंदू राज्य के रूप में, भारत के बहुसंख्यक हिंदू समाज में प्रचुर सामर्थ्य रखता है। दोनों राष्ट्रों के बीच खुली सीमा पारगमन का मधुर रिश्ता है जहाँ भारत नेपाल के अलावा किसी भी एशियाई देशों के साथ ऐसा अटूट संबंध नहीं है। भारत और नेपाल के बीच संबंध हमेशा अनोखे सम्बन्ध रहे हैं। भौगोलिक निकटता, खुली सीमा, सांस्कृतिक, सभ्यता, ऐतिहासिक और सामाजिक बंधनों ने प्राचीन काल से दोनों देशों के बीच पारिवारिक और प्रगाढ़ सम्बन्ध बनाए रखने में महत्वपूर्ण समर्थन प्रदान किया है लेकिन पिछले कुछ वर्षों में, भारत-नेपाल संबंधों में रिश्ते कमजोर होने के साथ-साथ, अविश्वास की भावनाओं को भी महसूस किया गया है, जिसका सीधा असर दक्षेस के सदस्य रहते हुए भारत के साथ संबंधों की कमजोरी को दर्शाता है।

2005 के बाद नेपाल में राजनीतिक अस्थिरता के साथ भारत-नेपाल संबंधों में लगातार गिरावट आई है, लेकिन चीन दक्षिण एशियाई सहयोग संगठन को लगातार कमजोर करने के लिए आर्थिक राजनीतिक तिकड़ी का उपयोग करता रहा है। नेपाल अपनी भौगोलिक एवं प्राकृतिक स्थिति के कारण कमजोर राष्ट्र हो सकता है जिसका सहजरूप से अनुमान लगाया जा सकता है, जिसे नेपाल चीन को केंद्र में रखकर भारत से लाभ लेना चाहता है। दोनों राष्ट्र नेपाल में अपने-अपने हित के क्षेत्रों का विस्तृत करने का प्रयास कर रहे हैं। नेपाल चारों तरफ से पहाड़ों और कंटीले वनों से घिरा हुआ राष्ट्र है, जो केवल दो देशों के साथ संपर्क स्थापित कर सकता है, जिसमें भारत, जो सदियों से मधुर संबंध को कायम किये हुए है, भारत के तीन तरफ नेपाल

की सीमा सटे हुए हैं, एवं दूसरी ओर चीन की सीमा समीप है। प्राचीन काल से, भारत नेपाल अपनी जरूरतों के हिसाब से एक-दूसरे की सीमा में परस्पर आवागम करते हैं, इतना ही नहीं नेपाल काफी हद तक भारत पर निर्भर है वहाँ बेरोजगारी एवं आर्थिक हालात ठीक नहीं होने से भारत में प्रायः पारगमन करना पड़ता है। भारत के लिए नेपाल में, चीन की चुनौती अब विशालकाय हिमालय पर्वत जितनी विशाल हो गई है। नेपाल में चीन का प्रवेश दो पहलुओं को दर्शाता है, पहला 'ग्रेटर नेपाल' और दूसरा 'नेपाल फॉर पीस'। ये दोनों अवधारणाएं भारत और नेपाल के बीच दो प्रमुख संधियों को चुनौती देती हैं। जिसमें 'ग्रेटर नेपाल' 1816 को सुगौली की संधि और 1950 की भारत-नेपाल संधि को चुनौती प्रस्तुत करता है।

पिछले एक दशक में नेपाल में राजनीतिक परिवर्तन, सत्ता में आने वाली माओवादी ताकतें और नेपाल में चीन का दखल भारत के लिए एक बड़ी चुनौती बना हुआ है और मोदी सरकार को इन सबके बीच भारत की हिस्सेदारी को सुरक्षित करना होगा। तीनों देशों के संबंधों के कई पहलू भारत की चिंता बढ़ा रहे हैं। ऐसे विचारकों का मानना है कि चीन की राजनीतिक रणनीति अपने पड़ोसी देशों पर नेपाल पर हावी होने की है। प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली ने कई निर्णय लिए हैं, जिसमें नेपाल भी चीन की वन-वे परियोजना, वन बेल्ट वन रोड के साथ मदद कर रहा है। नेपाल के नए संविधान पर मधेसी की आपत्ति के कारण, 2015 में भारत द्वारा अनौपचारिक नाकाबंदी के कारण नेपाल के आवश्यक सामानों की लंबी कमी हो गई। जिसके दौरान, नेपाल की राजनीति में, भारत के खिलाफ एक रणनीति पर क्रोध पैदा हुआ, जिसे चीन ने बहुत अवसर और सहानुभूति दिखाई। हालाँकि भारत ने नेपाल की ओर नाकाबंदी को समाप्त कर दिया, लेकिन चीन की सहानुभूति ने नेपाल को अपनी ओर खींच लिया। यह सच है कि प्रत्येक राष्ट्र के अपने राष्ट्रीय हित होते हैं जो समय, काल और परिस्थितियों के कारण निरंतर बदलते रहते हैं। सार्क के संदर्भ में, भारत-नेपाल संबंध समसामयिक वातावरण में परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। भारत नेपाल सम्बन्धों में चीन की कोई भूमिका, नेपाल में अस्थिरता के कारण एवं भारतीय विदेश नीति के निर्धारण में कौन से कारक है जो भारत-नेपाल सम्बन्धों में कटुता के लिए उत्तरदायी है।

-डॉ. हिमाँशु मिश्र

विषय-सूची

भूमिका *v*

1. भारत-नेपाल का परिचय **1**

1. भौगोलिक स्थिति
2. नदी घाटिया
3. आकृति और माप
4. सतह
5. महान हिमालयी क्षेत्र
6. आंतरिक हिमालय प्रदेश
7. तराई क्षेत्र
8. दक्षिण एशिया के सदंर्भ में नेपाल की स्थिति
9. दक्षिण एशिया और नेपाल
10. सार्क
11. जलवायु
12. नेपाल की अवस्थिति का भू-राजनीतिक (सामरिक) महत्व
13. भारत-नेपाल संबंध (सामाजिक-धार्मिक और सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्र)
14. सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्र
15. सामाजिक क्षेत्र
16. आर्थिक क्षेत्र
17. नेपाल का कला साहित्य एवं शिक्षा का भारत से संबंध

नमूना SAMPLE

2. भारत-नेपाल संबंधों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य **20**

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (प्राचीन काल से ब्रिटिश आगमन पूर्व)
2. नेपाल-ब्रिटेन संबंध (ब्रिटिश काल से आजादी तक)
   2.1 सुगौली की संधि (1816)
   2.2. संधि की वैधता
   2.3. 1923 की शांति एवं मैत्री सहमति
3. आजादी के उपरांत भारत-नेपाल प्रगाढ़ संबंध
4. भारत-नेपाल के मध्य मैत्री, व्यापार एवं वाणिज्यिक समझौता (31 जुलाई 1950)

3. भारत-नेपाल संबंधों में दक्षेस **47**

1. सार्क की स्थापना की पृष्ठभूमि
2. उद्देश्य
3. सिद्धान्त
4. चार्टर के तहत उल्लेख
5. संरचना
6. सहयोग के क्षेत्र
7. सार्क सहयोग संगठन
8. भारत और नेपाल संबंध सार्क के संदर्भ में
9. सार्क संगठन के सम्मेलनों का आयोजन
10. उपलब्धियाँ
11. सार्क की असफलता के कारण

4. भारत-नेपाल संबंधः सामरिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य **75**

1. स्वतंत्रता उपरान्त भारत-नेपाल संबंध
2. 1960-70 के दशक में भारत और नेपाल संबंध
3. सुरक्षा संबन्धित
4. 'शान्ति क्षेत्र' प्रस्ताव की घोषणा
5. 1980-90 के दशक में भारत नेपाल संबंध
6. नेपाल में माओवादी समस्या तथा विकास में बाधा
7. आईएसआई द्वारा नेपाल में भारत विरोधी गतिविधियाँ
8. तस्करी का माध्यम

SAMPLE

9. भारत और नेपाल के मध्य सामरिक, राजनीतिक एवं आर्थिक दृष्टि से संबंध स्थापित होना (सन् 2000 से अब तक)
10. नेपाल में चीनी परियोजनाएं भारत के लिए चुनौती
11. भारत-नेपाल संबंध में नवीन विवाद का कारण लीपुलेख नक्शा

5. नेपाल की लोकतान्त्रिक क्रांति के बाद भारत-नेपाल संबंधों में उभरती नयी प्रवृतियाँ **121**

1. भारत, नेपाल के विकास में सहयोग
   1.1. जल विद्युत ऊर्जा में बढ़ावा देने के साथ सहयोग
   1.2. नेपाल में पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग
   1.2.1. संयुक्त पर्यटन को प्रोत्साहन देना
   1.3. शिक्षण और प्रशिक्षण
   1.4. खनिज खोज और उनका उपयोग
   1.5. सूचना और सचांर प्रौद्योगिकी में अनुदान
   1.6. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश
   1.7. भारत-नेपाल संयुक्त उपक्रम
   1.8. औद्योगिक क्षेत्र में सहायता और निर्धारण
   1.9. वित्तीय सहायता
   1.10. रक्षा सहयोग
   1.11. सांस्कृतिक एवं सामाजिक व राजनीतिक संबंध
   1.12. व्यापार एवं निवेश के क्षेत्र में विस्तृत सम्बन्ध
   1.13. सीमा सुरक्षा और उसक प्रबन्धन
   1.14. उद्योग व परियोजनाएं
   1.15. जल संसाधन में सहयोग
   1.16. काला पानी विवाद
   1.17. सप्तकोशी बांध
2. मधेशी एवं उनकी समस्याएं

6. निष्कर्ष **165**

संदर्भ-ग्रन्थ-सूची **172**

SAMPLE

नमूना • SAMPLE

अध्याय

1

भारत-नेपाल का परिचय

भारत-नेपाल सम्बन्ध बहुत ही प्राचीन काल से है। वर्तमान में इन दोनों के मध्य प्रगाढ़ सम्बन्ध है। ये दोनों राष्ट्र सम्पन्न हैं और इनकी एक सुनिश्चित भौगोलिक सीमाएँ हैं तथा दोनों ही देश दक्षेस के सदस्य हैं। इन दोनों के पारस्परिक सम्बन्ध इस क्षेत्र की शान्ति, समृद्धि तथा विकास को प्रभावित करते हैं। दोनों देशों के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो कई ऐसे साक्ष्य मिलेंगे, जिनकी संस्कृति, रहन-सहन एक जैसा है, जो यह परिलक्षित करता है कि दोनों देश एक दूसरे से न केवल प्राचीन काल से अत्यन्त घनिष्ट रूप से जुड़े हुए हैं बल्कि दोनों देशों का समाज एक ही दिखायी देता है। भारत नेपाल के साथ बड़े भाई की तरह संबंध निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ता चाहे वहाँ राजनीतिक हलचल हो या नेपाल की आर्थिक हालात, वह बखूबी इस संबंध को समानता पर आधारित माना करता है और उन्हीं नियमों से संचालित भी करता है। उदाहरण स्वरूप जब कभी भारत में किसी क्रान्ति को चलाना होता है तो यहाँ के क्रान्तिकारी नि:संकोच नेपाल में जाकर अपनी गतिविधियों की रणनीति तैयार करते हैं और दूसरी तरफ भारत के राजनीतिक क्रान्तिकारी वहाँ चले जाते हैं। भारतीय सीमा में पारगमन करने के लिए किसी वीजा की आवश्यकता नहीं होती है, इसलिए सुगतापूर्वक नेपाल से भारतीय सीमा

SAMPLE

में आना-जाना हो सकता है। प्रायः नेपाल की आबादी का एक बड़ा भाग भारत में जीविकोपार्जन हेतु आते रहते हैं। यह उस भाई-चारे का प्रतीक है जो सहस्राब्दियों से चला आ रहा है।

भारत के उत्तरी सीमा पर विशाल हिमालय के मध्यवर्ती भाग के मध्य यानि हिमालय की गोद में बसा नेपाल अपनी प्राचीन संस्कृति के लिए जाना जाता है। विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट यहीं पर है जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण पर्यटकों की पसंदीदा पर्यटन स्थल बना हुआ है। यहाँ कुछ प्रमुख नदियाँ- कर्नाली, गंडक, कोसी आदि प्रवाहित होती हैं। यह एक बहुजातीय देश है, जिसकी आधिकारिक राष्ट्रीय भाषा नेपाली है। नेपाल, अधिकारिक रूप से संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य दक्षिण एशिया का 26.4 मिलियन जनसंख्या वाला बंदरगाह विहीन देश है। जिसकी राजधानी विश्व प्रसिद्ध काठमांडू है। आधुनिक नेपाल धर्म निरपेक्ष संसदीय गणराज्य है। नेपाल को गोरखों का देश भी कहा जाता है, जहाँ नेपाली इनफेन्ट्री गोरखा रेजिमेंट अपनी युद्ध कौशल तथा वीरता के लिए विश्व प्रसिद्ध है। भारत में भी गोरखा रेजीमेंट के नाम से एक सेना संगठित की गई है जो अनेक विकट परिस्थितियों में धरातलीय दुर्गमताओं, विषमताओं एवं जलवायु की असहनशीलताओं के बावजूद भी यह रेजीमेंट शत्रु पर विजय पाने के लिए अपनी कोई भी मिशाल नहीं छोड़ती है। नेपाल पूरी तरह से मित्र देश भारत पर निर्भर है। यह विभिन्नताओं का देश है जहाँ भारत सरकार सदैव सहायता प्रदान करती रहती है। महाराजा वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह इस स्वतंत्र देश के सम्प्रति शासक थे।[1] हेमिल्टन फिश आर्मस्ट्रांग ने नेपाल का परिचय देते हुए लिखा है कि "नेपाल वह देश है जहाँ भारत चीन का सामना करता है।"

वैदिक काल से नेपाल भारत से अभिन्न रूप से जुड़ा है। पौराणिक रूप से यह मान्यता है कि निमि नाम के एक मनीषी ने इस क्षेत्र की स्थापना की थी जो कालान्तर में इसे 'निमिना पालित राष्ट्र नेपालम' कहा गया। रामायण काल में यहीं, जनकपुरी के राजा क्षीरध्वज ने अपनी पुत्री सीता का विवाह, अयोध्या के राजकुमार श्री राम से किया। क्षीरध्वज के छोटे भाई कुशध्वज ने अपनी बेटी उर्मिला का विवाह राम के छोटे भाई लक्ष्मण के साथ किया। विद्वानों ने भारतीय स्त्री चरित्र को माँ सीता के चरित्र से उत्पन्न बताया है

तथा उनका चरित्र 'पवित्रतम से भी पवित्र'[2] बताया तथा उर्मिला के त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।[3] महाभारत काल में यहाँ के युवाओं ने महायुद्ध में, पांडवों की ओर से भाग लिया था। यहीं पर महात्मा बुद्ध का लुम्बिनी में जन्म हुआ था।

नेपाल के पुरातन अस्तित्व को बताने वाले पौराणिक ग्रन्थों में 'नेपाल वंशावली' नामक ग्रन्थ का जो नाम उल्लेखनीय है उसमें नेपाल के विद्वानों को पुरातत्व और इतिहास के प्रमाण उपलब्ध हुए हैं, जिसमें विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि नेपाल का अस्तित्व पुरातन सतयुग से है जिसमें नेपाल घाटी विशाल झील या सरोवर के रूप में विद्यमान थी और प्राचीन आधार पर ज्ञात हुआ कि बौद्ध मंजुश्री तथा सनातनी विष्णु ने 'नागद्ध' नामक एक विशाल झील की जो दक्षिणी पर्वत श्रृंखलाओं को काटते हुए पानी का धाराप्रवाह किया एवं साथ-ही-साथ यह भी अपने वक्तव्य में कहा कि "यह स्थान अनेक जाति, धार्मों, अनुयायियों और तीर्थों से युक्त होकर सस्यश्यामला और उपजाऊ भूमि के रूप में परिणत होगा, तभी यहाँ जीवन, स्थान रहने योग्य होगा और उसी झील के स्थान पर वर्तमान नेपाल देश बसा हुआ है। 'स्कंद पुराण', 'दवेपुराण', और 'बाराहतंत्र' आदि पौराणिक ग्रन्थों में इसके नामकरण के संबंध कई तरह के आख्यान प्राप्त होते है'।[4] परन्तु एक पौराणिक आख्यान में कहा गया है कि "पुराणकाल में 'ने' नामक एक प्रसिद्ध तपस्वी ऋषि थे जो वागमती और विष्णुमती नामक नदियों के संगम पर उनकी तपस्थली और साधना स्थली थी, जो उन्हीं के आर्शीवाद से उस भू-भाग के तत्कालीन राजाओं ने कल्याणार्थ हेतु पूजा अर्चना किया करते थे जो उस भू-भाग को नेपाल के नाम से जाना गया"। चूँकी नेपाल में ऊन ज्यादा होती है और आजीविका का प्रमुख साधन भी है, इसलिए तिब्बत के लोग इसे 'पालदेश' के नाम से भी पुकारते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि कुछ लोग नेपाल देश को 'नीप' नामक राजा के नाम से भी जोड़ते है क्योंकि यह राजा प्रसिद्ध चन्द्रवंशीय महाराज नहुश के पूर्व वंशज थे। जिसमें "नीप" का अभिप्राय है 'नेपाल का नीचे का भाग'। कुछ इतिहासकार नेपाल को पहाड़ का निचला भाग भी कहते हैं, क्योंकि नेपाल 'पर्वतों की घाटी में बसा हुआ देश।[5] पाँचवी शताब्दी ई.पू. काठमाण्डू

की सुरम्य घाटी में गोपाल, कीरत, लिच्छवी आदि छोटे-छोटे राज्य थे। चाणक्य ने नेपाल का जिक्र किया है। यहीं पर महात्मा बुद्ध का लुम्बिनी में जन्म हुआ था। मौर्य वंश के सम्राट अशोक की एक पुत्री का विवाह नेपाल के पर्वतीय क्षेत्र के एक सम्राट परिवार के व्यक्ति से हुआ तथा उसका साम्राज्य नेपाल तक था।[6] गुप्त शासक समुद्रगुप्त के साम्राज्य में नेपाल का राज्य भी था।[7] हर्षचरित्र से ज्ञात होता है कि उसने किसी लुखारध्वज, पर्वतीय प्रदेश से कर ग्रहण किया था। ऐसा भी माना जाता है कि नेपाल के राजा ने हर्ष से मित्रता स्थापित की थी तथा उपहार स्वरूप बहुत सा धन भेजा था।[8]

इतिहासकार के. एम. पाणिक्कर ने बताया है कि, "हर्ष के शासनकाल में नेपाल भी सम्मिलित किया गया था" जबकि राधा कुमुद मुखर्जी ने बताया कि, नेपाल मात्र उसके प्रभाव क्षेत्र में था।[9] परन्तु उन्नसवीं शताब्दी के आरंभ में नेपाल भू-प्राकृतिक आपदाओं जैसी समस्याओं के कारण कई राज्यों में विभक्त हो गया, और तिब्बत से घोर संघर्ष करने के उपरांत एक स्वतंत्र देश के रूप में उभरा।

भारत एवं चीन के बीच व्यापार का प्रमुख मार्ग होने से उसकी आर्थिक स्थिति में सुधार आया परन्तु इस्लामीकरण होने से पूर्णत: बचा रहा। राजपूत ध्रुवसेन ने 1559 में शाहवंश की स्थापना की। उसने पर्वतीय प्रदेश (काठमाण्डू) के पश्चिमी क्षेत्र एवं उत्तराधिकारियों ने मध्य क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। पृथ्वी नारायण शाह ने काठमाण्डू पर अधिकार करते हुए, वहाँ पर 1769 में लम्बी अवधि से रह रहे मल्ल राजाओं पर विजय प्राप्त करते हुए, संयुक्त नेपाली साम्राज्य की स्थापना की।

1. भौगोलिक स्थिति

नेपाल भारत और चीन के बीच एक बफर राज्य के रूप में स्थित है। यह एक हिन्दू राष्ट्र है जो पश्चिम से पूर्व 840 किलोमीटर फैला है। उत्तर में हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियाँ तथा दक्षिण उष्ण कटिबंधीय तराई के जगंलों के मध्य है। विस्तारित रूप से यह देश $26^0 20'$ उत्तरी अक्षांश से $30^0 10'$ उत्तरी अक्षांश तथा $70^0 15'$ पूर्वी देशान्तर से $88^0 15'$ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। इसका उत्तर-दक्षिण विस्तार 235 किलोमीटर तथा पूर्व-पश्चिम

विस्तार 840 किलोमीटर है। इस क्षेत्र में काफी उर्वर घाटियाँ है जो दुनियाँ की 14 ऊँची चोटियों में आठ नेपाल में ही पायी जाती है, इसका क्षेत्रफल 1,47,181 वर्ग किलोमीटर है, जहाँ 2 करोड़ 78 लाख जनसंख्या निवास करती है। इस आबादी में लगभग 90 प्रतिशत हिन्दू धर्म के तथा 10 प्रतिशत बौद्ध धर्म एवं अन्य धर्म के लोग हैं। नेपाल बहुत ही निर्धन देशों में एक गिना जाता है जिसकी 80 प्रतिशत से ज्यादा आबादी कृषि पर ही निर्भर रहती है, इसकी प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 656 अमेरिकी डालर है।[10] दुनिया की सबसे ऊँची चोटी हिमालयन माउंट एवरेस्ट (8848मी^{0}) है जिसे नेपाल में सागरमाथा के नाम से जाना जाता है, नेपाल में होने के कारण इसमें निरंतर श्रृंखलाएँ मौजदू हैं जो नेपाल के पूर्वी हिस्से में स्थित हैं। वास्तव में, नेपाल पहाड़ों और घाटियों का देश है, दुनिया की सबसे ऊँची चोटियाँ नेपाल में ही स्थित हैं। उत्तर में तिब्बत (चीन), पूर्व में सिक्किम और पश्चिम बंगाल एवं पश्चिम की तरफ उत्तराखण्ड और दक्षिण में उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य स्थित है। इस प्रकार नेपाल की तीन तरफ भारत की सीमाएँ हैं, जबकि एक तरफ उत्तरी चीन का तिब्बत प्रांत है। नेपाल के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 83 प्रतिशत भाग उत्तर की ओर पहाड़ी और बर्फीला है, भारत के सामने दक्षिण का केवल 17 प्रतिशत ही मैदान है जिसे तराई कहा जाता है।

नेपाल एक विकासशील देश है जिसमें बहुत ही सुंदर प्राकृतिक परिदृश्य हैं। यह चारों तरफ से पहाड़ों, पेड़ों और कंटीले जंगली वनों से घिरा हुआ देश है, जो तीनों तरफ से भारतीय सीमा और उत्तर से चीन की सीमाओं से सटा हुआ, समुद्र तट तक पहुँचने का कोई सुगम रास्ता नहीं है। नेपाल को समुद्री मार्ग तक पहुँचने के लिए पड़ोसी देश भारत से ही रास्ता मिल सकता है। नेपाल की इसी भू-आबद्धता ने आर्थिक विकास को प्रभावित कर रखा है, जिससे उसका झुकाव भारत और पड़ोसी देशों की ओर निर्भर कर रखा है। दूसरी ओर, प्राचीन काल से, भारतीय सीमा ने नेपाल मार्ग के साथ सीधा संपर्क खोला है जिसमें दोनों देशों के नागरिक एक दूसरे के देश में पर्यटकों के रूप में या व्यापार के सिलसिले में आते रहते हैं। इस प्रकार, बिना अनुमति के अन्तर्राष्ट्रीय सीमा में प्रवेश करना बहुत कम अन्तर्राष्ट्रीय देशों में देखा जाता है।

तीन-चौथाई नेपाल पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है, जबकि 17 प्रतिशत हमेशा बर्फीली चादर से ढका रहता हैं। तराई, नदी घाटियाँ नेपाल के लगभग एक चौथाई क्षेत्र में स्थित हैं। इसे मर्तूरूप से विभिन्न भागों में विभाजित किया जा सकता है-

1. ग्रेट हिमालयन रेंज जिसमें सबसे ऊंची पर्वत चोटी स्थित है।
2. मध्य हिमालयी श्रेणी - पर्वतीय क्षेत्र, जहाँ काठमाण्डू, पोखरा और अन्य घाटियाँ स्थित हैं।
3. महाभारत ग्रंथ शिवालिक श्रेणी के उत्तर में एक छोटी सी हिमालय श्रृंखला है, कई घाटियाँ चुरे रेंज और महाभारत पाठ के बीच स्थित हैं।
4. शिवालिक क्षेत्र - जिसे स्थानीय लोग 'चुर' पहाड़ियों के नाम से जानते हैं।
5. तराई क्षेत्र - नेपाल के दक्षिण में स्थित, उत्तर प्रदेश और बिहार से सटे 51 से 251 मीटर ऊंचे चौरस मैदान का निर्माण जलोढ़ नदियों से हुआ है।

2. नदी घाटियाँ

तीन नदी प्रणालियाँ मुख्य रूप से नेपाल में पश्चिम से पूर्व की ओर विकसित होती हैं (1) करनाली या घाघरा नदी (2) गंडक नदी प्रणाली (3) कोसी नदी घाटी।

उपरोक्त नदियों ने पूरे नेपाल को आश्चर्यजनक प्राकृतिक रंग प्रदान किए हैं। ऊँचे पहाड़ों को काटकर, नदियों ने बड़ी-बड़ी खाइयाँ बनाई हैं और हिमालय को विच्छेदित कर उन्हें चार भागों में विभाजित किया है। नदियाँ अपने साथ अवसाद लाती हैं और तराई क्षेत्रों में जमा करती हैं। नेपाल का दक्षिणी भाग एक तराई के मैदान में परिवर्तित हो गया है और कृषि योग्य मैदान बना।

3. आकृति और माप

नेपाल का आकार अनुदैर्ध्य रूप से आयताकार है। जिसे चतुष्कोणीय

आकार भी कहा जा सकता है। इसकी लंबाई पूर्व से पश्चिम तक 882 किमी है जबकि उत्तर से दक्षिण की चौड़ाई 241 किमी है।

नेपाल एक छोटा सा पहाड़ी देश है जो भारत के उत्तरी भाग में स्थित विशाल हिमालय पर्वत श्रृंखला के मध्य एक चतुर्भुज में फैला हुआ है। इस देश का अधिकांश भाग पहाड़ी है। इस पहाड़ी राज्य के लोग छोटे कद के हैं और इन्हें गोरखे के नाम से भी जाना जाता है।

4. सतह

नेपाल मुख्य रूप से एक पहाड़ी देश है लेकिन अन्य भूमि कार्य भी दिखाई देते हैं। कुछ स्थानों पर उत्तुंग शिखर, कुछ स्थानों पर दलदली स्थलाकृति, कुछ स्थानों पर शहरी घाटी और कुछ स्थानों पर चौरस मैदान हैं। नेपाल की भूमि को मुख्य रूप से तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

1. महान हिमालयी क्षेत्र
2. आतंरिक हिमालयी क्षेत्र
3. तराई क्षेत्र

5. महान हिमालयी क्षेत्र

कोबर के अनुसार, लबें समय तक गोंडवानालैंड और अंगारालैंड में बहने वाली नदियों ने टेथिस सागर में अवसादों को जमा किया। जिसके कारण मलवा टीथिस भूमि में जमा होने लगा और लंबी अवधि तक मलबे के एकत्र होने के कारण, मलबे का दबाव ज्यादा होने लगा जिस कारण मलबे में वृद्धि होती गयी और दबाव ज्यादा बढ़ने की वजह से टेथिस नीचे की ओर आगे बढ़ना शुरू हो गया और आयाताकार मात्र में वृद्धि होने लगी। इस प्रक्रिया से हिमालय की उत्पत्ति हुई। हिमालय नेपाल में एक प्राकृतिक दीवार की तरह खड़ा है और नेपाल को अन्य देशों से अलग करके सुरक्षा प्रदान करता है। ग्रेट हिमालय को केवल कुछ पास की मदद से पार किया जा सकता है। नेपाल का यह सबसे उत्तरी भाग है जो पश्चिम से पूर्व की ओर लम्बवत अवस्था में फैला हुआ है। यह भाग नितांत ठण्डा एवं बर्फीला है इस भाग में

अनेकों ऊँची चोटियाँ, गहरे ढाल, तथा गहरी घाटियाँ पायी जाती है। जिनसे होकर कर्नाली, कोसी, एवं गण्डक नदियाँ हजारों मीटर गहरी खड्ड बनाती हुई प्रवाहित होती है। ये सभी नदियाँ पूर्ववर्ती हिमालय के उत्थान से पहले की है। इस प्रदेश में तीन ऊँची चोटियाँ पायी जाती है-

(1) एवरेस्ट (8846 मीटर)

(2) कंचनजंघा (8598 मीटर)

(3) घौलागिरी (8509 मीटर) इस प्रदेश में कठोर जलवायु पायी जाती है।

शीतकाल में यहाँ व्यापक स्तर पर हिमाच्छादन होता रहता है।

6. आतंरिक हिमालय प्रदेश

यह क्षेत्र ग्रेट हिमालय और तराई के मैदानों के बीच फैला हुआ है, इस हिस्से में पर्वत श्रृंखलाएं हैं जिन्हें धग दंडवा और महाभारत लेख कहा जाता है। इस पर्वत श्रृंखला की ढलान दक्षिण की ओर तेज और उत्तर की ओर धीमी है। हिमालय और महाभारत के बीच, एक 60-100 किमी चौड़ा मैदान है, जिसे मध्यवर्ती मैदान कहा जाता है। इस क्षेत्र में महाभारत ग्रन्थ और महान हिमालय के बीच काठमाण्डू घाटी है, यह घाटी 24 किमी लंबी और 11 किमी चौड़ी है। इस घाटी में गर्मी, बरसात और सर्दी तीन मौसम हैं। इस राज्य के पर्वतीय ढलानों पर कई प्रकार की वनस्पतियाँ विकसित हुई हैं। काठमांडू की घाटी इस क्षेत्र की जलवायु का सटीक प्रतिनिधित्व करती है। यह घाटी समुद्र तल से 1500 मीटर ऊपर है। इस घाटी में अर्ध-उष्णकटिबंधीय वनस्पति पाए जाते हैं। काठमाण्डू में जून और सितंबर के बीच लगभग 150 सेमी॰ बारिश होती है। यहाँ की उपज चावल, गन्ना, केला, नारंगी आदि है।

7. तराई क्षेत्र

दक्षिण पश्चिम से पूर्व की ओर फैली हुई, यह संकीर्ण पट्टी का क्षेत्र है। इस हिस्से में चुरिया पर्वत श्रृंखला फैली हुई है, जो सालाना बाँस और सागौन के पेड़ों से ढकी रहती है। इस क्षेत्र में कई घाटियाँ पश्चिम से पूर्व की ओर पाई जाती हैं। इसकी उत्तरी भाग दलदली है और मलेरिया और इन्सेफेलाइटिस

जैसी बीमारियों को फैलाने में मदद करता है। यहाँ सभी नदियाँ पहाड़ों से निकलती हैं जिसके कारण पानी की उपलब्धता बनी रहती है, और वहाँ का क्षेत्र जलमग्न या स्तर पर बना रहता है, जिसे तराई कहा जाता है। इस क्षेत्र में धान की फसल अच्छी होती है। इसके अलावा, गन्ना जूट, तंबाकू, अनाज और राई बोई जाती है। यहाँ की मिट्टी में पूर्व की ओर मोटे जलोढ़ और बारीक जलोढ़ पाए जाते हैं।

8. दक्षिण एशिया के संदर्भ में नेपाल की स्थिति

यदि एशिया की विशाल भूमि में देखा जाए, तो यह महसूस किया जाता है कि कई महाद्वीपों का अध्ययन एक साथ किया जा रहा है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, भूवैज्ञानिकों ने अध्ययन की सुविधा के लिए एशिया को कई भागों में वर्गीकृत किया है। गिंसबर्ग ने इसे पांच प्रमुख भागों में वर्गीकृत किया है। डडली स्टैंप ने इसे छह भागों में विभाजित किया है, कैसी ने इसे पाचं भागों में विभाजित किया है और ब्रिक और स्पेट ने इसे छह भागों में विभाजित किया है। वर्गीकरण के लिए सभी विद्वानों का एक अलग आधार है। लेकिन अध्ययन की सुविधा के लिए, एशिया का एक सामान्य वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है, जिसमें एशिया को छह भागों में विभाजित किया गया है, जो इस प्रकार हैं - 1. दक्षिण-पश्चिमी एशिया, 2. दक्षिण-एशिया, 3. दक्षिण-पूर्वी एशिया, 4. पूर्वी एशिया, 5. उच्च एशिया और 6. सोवियत एशिया या मध्य एशिया।

9. दक्षिण एशिया और नेपाल

दक्षिणी एशिया के देशों को भारतीय उपमहाद्वीप देशों के रूप में भी जाना जाता है। जिसमें भारत, नेपाल, भूटान, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका और मालदीव शामिल है, जो वर्तमान में अफगानिस्तान भी शामिल कर लिया गया है।

दक्षिण एशियाई देशों में क्षेत्रफल और जनसंख्या के मामले में नेपाल चौथा सबसे बड़ा देश है। तीन प्रमुख देश क्रमशः भारत, पाकिस्तान और बाग्लादेश हैं और तीन छोटे देश क्रमशः श्रीलंका, भूटान और मालदीव हैं। दक्षिण एशिया का विशाल भू-भाग और क्षेत्रफल 44.9 लाख वर्ग किमी है,

जिसमें 147182 वर्ग किमी है। नेपाल द्वारा इलाके को कवर किया जाता है।

नेपाल दक्षिणी एशिया के पर्वतीय क्षेत्र का अगुवा राष्ट्र है। सर सिडनी बुरार्ड ने हिमालयी पर्वतीय क्षेत्र को पहले के नदियों के द्वारा निर्मित खड्ड को क्षेत्रीय आधार बनाकर वर्गीकृत किया है। जिसमें से काली तथा तिस्ता नदियों के मध्य का भाग नेपाल हिमालय है। काली से तीस्ता के बीच की लंबाई 800 किमी है। इस क्षेत्र की औसत ऊचांई 6850 मीटर है। इस हिस्से में कई ऊंची चोटियां मौजूद हैं।

नेपाल दक्षिणी एशिया का उत्तरी राष्ट्र है और चारों ओर से भूमि से घिरा हुआ है। यह दो सम्पन्न आर्थिक देश भारत एवं चीन के सीमा से घिरा हुआ है जिसमें भारतीय सीमाएं तीन तरफ से घिरी हुई है- पूर्वी, पश्चिमी एवं दक्षिणी तथा चीन के उत्तरी सीमा से सटा हुआ राष्ट्र है। जिसके कारण इसका सामरिक महत्व ज्यादा बढ़ जाता है क्योंकि दो विशाल साम्राज्यों के बीच यह बफर राज्य की भूमिका निभाता है। दक्षेस का मुख्यालय काठमाण्डू में स्थित हैं जो दक्षिण एशियाई संगठन के व्यापार संबंधों का नेतृत्व कर रहा है।

10. सार्क

यानि दक्षेस दक्षिण एशिया के सात देशों का एक सहयोग संगठन था इसका मुख्यालय काठमाण्डू था।[11] इसका मुख्य उद्देश्य कमजोर राष्ट्रों के सहयोग के लिये स्थापित किया जाना प्रस्तावित था जिसमें भारत, पाकिस्तान, नेपाल, बाग्लादेश, भूटान, श्रीलंका और मालदीव राष्ट्र सदस्य के रूप में सम्मिलित है। वर्ष 2007 में अफगानिस्तान ने भी सार्क की सदस्यता ग्रहण कर ली।[12] सभी आठों राष्ट्र पृथ्वी के एक विस्तृत भू-भाग को घेरे हुए है। इस क्षेत्र में भारत एक हृदय देश के समान है। इन सभी सदस्यों में भारत एक विशाल जनसंख्या और वैज्ञानिक तकनीकी ज्ञान में दक्षिण एशिया के सभी सदस्य देशों से आगे है। सार्क सदस्य देशों में नेपाल की आर्थिक स्थिति सबसे दयनीय है। सार्क के माध्यम से भारत नेपाल का हर संभव उसके आर्थिक स्थिति और योजनाओं में मदद करता रहता है चूँकि सार्क की स्थापना कमजोर देशों को विकसित करना है जिसमें भारत के सहयोग से सार्क में नेपाल को ज्यादा महत्व मिलता है और उसके उद्योग और यातायात तथा परियोजनाओं

में मदद मिलता रहता है।

11. जलवायु

अक्षांशीय स्थिति के अनुसार, नेपाल उष्णकटिबंधीय जलवायु के अंतर्गत आता है लेकिन भौगोलिक स्थिति में यह समुद्र से एक ज्यादा दूरी पर स्थित है और महाद्वीपीय स्थिति में चारों ओर से पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है जिस पर ज्यादा समुद्री दूरी होने की वजह से पर्वतीय श्रृंखलाओं का असर जलवायु को स्पष्ट रूप से प्रभावित करती है, यही वजह है कि यहाँ की सर्दियाँ बहुत कठोर रूप से पड़ती है क्योंकि जैसे ही बर्फ हर जगह गिरती है, बर्फ की चादर फैल जाती है।[13] सभी स्थानों पर, सर्दियों का तापमान हिमांक से 10^0 डिग्री सेल्सियस से नीचे चला जाता है, एक पहाड़ी क्षेत्र होने के नाते, गर्मी के मौसम (जून से सितंबर) में तापमान (270 से0ग्रे0) ठंडा होता है, जो अधिक सुखद होता है। मौसम पर्यटकों और पर्वतारोहियों को आकर्षित करता है, यही नहीं, देश-विदेश के पर्यटक परिदृश्य के मनोरम दृश्य का लुफ्त उठाते हैं, जिसकी छवि देखने लायक होती है। इस मौसम से बारिश के मौसम का मानसून सत्र का शुरूआत होती है।

12. नेपाल की अवस्थिति का भू-राजनीतिक (सामरिक) महत्व

नेपाल उत्तर में तिब्बत (चीन का एक स्वायत्त राज्य) और दक्षिण से भारत से घिरा हुआ देश है। यह दोनों बड़े एशियाई देशों, चीन और भारत के साथ एक सीमा साझा करता है। आधुनिक नेपाल के जनक पृथ्वी नारायण शाह ने कहा कि नेपाल दो चट्टानों के बीच खिलने वाले फूल की तरह है। यह इलाके के मामले में दुनिया में 93 वां सबसे बड़ा और आबादी के हिसाब से 41वाँ सबसे बड़ा देश है। यह 18 मई 2006 को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की घोषणा की गई कि नेपाल एक संघ गणराज्य है। भारत और नेपाल के बीच 1751[14] किलोमीटर की सीमा रेखा सामरिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। नेपाल की भौगोलिक स्थिति इसे एक तरफ भारत के लिए महत्वपूर्ण स्थिति वाला देश बनाती है। साथ ही चीन भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। यह भारत और चीन जैसे दो विशाल साम्राज्यों के मध्य एक बफर जोन की भूमिका निभाता है। इसलिए चीन हिमालय पर कब्जा कर एशिया पर दबदबा करना चाहता है

तथा भारत नेपाल से अच्छे निश्चित रूप से भारतीय उपमहाद्वीप में नेपाल की स्थिति के कारण, इसकी सुरक्षा और प्रगति के साथ भारत की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। जबकि चीन, भारत का शत्रुतापूर्ण राष्ट्र होने के नाते, लोकलुभावन वादों और लाभों के बारे में बात करके नेपाल के नागरिकों को झूठा रोजगार का आश्वासन देकर आकर्षित करने का प्रयास करता रहता है।

नेपाल की सामरिक स्थिति दोनों राष्ट्रो के लिए काफी महत्वपूर्ण होने से नेपाली सरकार बखूबी इसका लाभ भी उठाती है, वह दोनों तरफ से लाभ लेने की कोशिश करता है। भारत विरोधी चीन नेपाल का तो बखूबी लाभ उठा रहा है, परन्तु नेपाल पर भारतीय प्रभाव होने के कारण निर्भरता बनी हुई है और भारत सामरिक दृष्टिकोण से भी नेपाल को अपने साथ रखना चाहता है, और नेपाल के विषम परिस्थितियों में आर्थिक मदद के साथ-साथ नेपाल के उद्योगों में काफी निवेश करता है।

स्वाधीनता के उपरान्त पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, 'हम नेपाल को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में पहचानते हैं और उसकी बेहतरी की कामना करते हैं। जहाँ तक भारत नेपाल के सम्बन्ध की बात है तो नेपाल को भारत के अन्दर से गुजरना है और भारत हमेशा नेपाल के स्नेह को सम्मान करता रहेगा और प्रत्येक राष्ट्र भारत और नेपाल के बीच स्थापित भौगोलिक और सांस्कृतिक संबंधों को स्वीकारता रहेगा।

उत्तरी हिमालयी कंदराओं से चीन नेपाली सीमा में प्रवेश करने का प्रयास करता रहता है। नेपाल को प्राकृतिक विशालकाय हिमालय की सुरक्षा और ऊँची-ऊँची चोटियों और पर्वतमालाओं से बचा रहता है अन्यथा नेपाल की तिब्बत जैसी ही स्थिति उत्पन्न हो सकती थी।

भारतीय दृष्टिकोण से, भले ही हिमालय की स्थिति बहुत महत्वपूर्ण हो, अन्यथा हम हमेशा आर्थिक संकट का सामना करेंगे। सामरिक रूप से हमें सुरक्षा कारणों से सेना पर भी भारी खर्च करना होगा।

चीन-नेपाल में अपने बाजार को विकसित कर, अपने माल की खपत तीव्रता से करना चाहता है जिसके चलते वह सस्ते ऋण की पेशकश करके नेपाल को आकर्षित भी करता रहता है, ताकि अपनी रणनीतिक नजर और

सामरिक अड्डे के जरिए भारत पर नजर रख सकता है। इसे ध्यान में रखते हुए, भारत को चाहिए कि नेपाल के जरूरी विकास कार्यों में अधिक पूंजी निवेश की जरूरत को समझे और सुझबूझ से काम लें। वास्तव में एक बफर स्टेट के रूप में, नेपाल की रणनीतिक स्थिति, दक्षिण एशिया में महत्वपूर्ण है। नेपाल, भारत और चीन के बीच एक बफर स्टेट के रूप में कार्य करता है।

स्पाइकमैन ने कहा है कि 'सूक्ष्म राज्य दो बड़े राज्यों के बीच स्थित छोटी राजनीतिक इकाइयाँ हैं'। इस प्रकार राज्य अपने अस्तित्व को बनाए रखते हैं और दो शक्तिशाली पड़ोसी राष्ट्रों को एक-दूसरे से अलग करते हैं। जैसे कि नेपाल भारत और चीन को अलग करता है। इसलिए, यह स्पष्ट है कि नेपाल एक अमानवीय राज्य है जो विदेश नीति और प्रतिरक्षा संधि द्वारा भारत से जुड़ा हुआ है। नेपाल हमेशा अपनी भौगोलिक स्थिति, धर्म और आर्थिक प्रणाली के कारण भारत के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है।[15]

ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत, अफगानिस्तान और हिमालयी राज्यों के निकटवर्ती राज्यों का निर्माण करके एक सराहनीय कार्य किया। तिब्बत के विलय के बाद, उनका महत्व और बढ़ गया और वे चीनी प्रभाव से बचने के लिए भारत के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गए। विदेशियों का दखल हिमालय के भू-राजनीति और एशिया के भू-राजनीति में अधिक है। वे भारत को एशिया महाद्वीप में एक शक्तिशाली राष्ट्र बनने से रोकने की कोशिश कर रहे हैं, और साथ ही चीन को कमजोर करना। दुनिया में साम्यवाद का प्रसार खत्म हो गया है। हिमालय जैसे वादियों में परिवहन व्यवस्था सुदृढ़ न होने कारण समस्याएं उत्पन्न होती हैं, जिसके अभाव में व्यापार ठीक तरह से नहीं हो पाता है।

मूलत: नेपाल शुरू से ही एक पिछड़ी और सामंतवादी व्यवस्था वाला राष्ट्र रहा है जिसने आज तक नेपाल के भीतर विकास के ढांचे को पूरा नहीं किया है। आज भी, नेपाल के कई जिले ऐसे हैं जहाँ परिवहन का कोई साधन नहीं है, बिजली और स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। कई क्षेत्र ऐसे हैं जो भोजन की कमी से जूझ रहे हैं। ऐसे नेपाल में साक्षरता लगभग 59.63 प्रतिशत है, लेकिन गरीबी और बेराजेगारी के कारण लोग आर्थिक संकट से

जूझ रहे हैं। नेपाल का मानव विकास सूचकांक 0.559 है।

इस प्रकार नेपाल आर्थिक विकास की गंभीर चुनौतियों का सामना करता है। लगभग एक दशक से चल रहे माओवादी आंदोलन और राजनीतिक अस्थिरता के कारण ये गंभीर चुनौतियां बढ़ी हैं।[16]

ऐसी स्थिति में, नेपाल की अर्थव्यवस्था मूल रूप से कृषि पर निर्भर करती है। कृषि योग्य भूमि का वितरण सामंतवादी है। वहाँ जमींदारों के पास जमीन है लेकिन आम जनता अपनी जीविका के लिए मजदूरों का काम करती है। नेपाल में कोई खनिज पदार्थ या अन्य प्राकृतिक संसाधन उत्पादन नहीं है। जहाँ औद्योगीकरण अभी तक नहीं हुआ है। अधिकांश कृषि कार्य नेपाल के तराई क्षेत्रों में किया जाता है। वैसे, प्रकृति ने नेपाल में पानी की बड़ी संपत्ति दी है और कृषि उपजाऊ भूमि और कृषि में आधुनिक तकनीक के उपयोग से स्थिति निर्मित हुई है। सड़कों की आवाजाही से सीमावर्ती क्षेत्रों कि रक्षा और सामरिक महत्व बहुत अधिक है। प्रकृति ने पहले ही रक्षात्मक दृष्टिकोण से नेपाल को मजबूत किया है, जिसमें हिमालय की पर्वत चोटियां दीवार के चारों आरे फैली हुई हैं और नेपाल मध्य में स्थित है।[17] नेपाल के अन्दर बहुत से क्षेत्रों में यातायात आवागमन बहुत दुर्लभ है एवं पहुँच पाना कठिन है फिर भी महान विशालकाय हिमालय नेपाल को सदैव से ही एक रक्षा कवच बन कर खड़ा है।

नेपाल के धार्मिक ग्रन्थों, हस्तलिखित ग्रन्थों तथा मुद्राओं को भी निम्नानुसार जाना जा सकता है[18] –

नेपाल के प्राचीन इतिहास को जानने के लिए, हिंदू धार्मिक ग्रंथों के रामायण, महाभारत और आदि पुराण आदि को एक प्रेरणा स्रोत के रूप में अपनाया जाता है। रामायण में वर्णित राजा जनक, जानकी को नेपाल का प्रतीक माना जाता है। इस प्रकार, नेपाल की चर्चा बौद्ध साहित्य में भी पाई जाती है। इसी समय, हस्तलिखित ग्रंथों को नेपाल के इतिहास में अत्यधिक विश्वसनीय स्रोत माना जाता है और राणा जंग बहादुर के कार्यकाल में पहली प्रिंट की दुकान का उपयोग वहां किया गया था। नेपाली लेखकों ने कॉपीराइटर के नाम का उपयोग कृति जमींदार और शासक के नाम का वर्णन करने वाले अन्य

संकेतों के लिए किया, जो एक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में बहुत महत्व रखता है। ये पांडुलिपियाँ, जो इतिहास के तथ्यों से भरी हैं, नेपाल के इतिहास में परिपूर्ण हैं। इसी तरह, नेपाल की मुद्रा में मुद्रा, छाल, तांबा, चांदी और सोने आदि का वर्णन है। प्राचीन लिच्छवी और ठाकुरी काल की मुद्रा भी उपलब्ध है। 1480 ई। के बाद विभाजित नेपाल के तीन राज्यों की मुद्राएँ भी उपलब्ध हैं। नेपाल में, प्रधानमंत्री शमशेर के दौरान कागजी मुद्रा का प्रचलन में आया।

13 भारत-नेपाल सबंध (सामाजिक-धार्मिर्क और सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्र)

भारत-नेपाल संबंध बहुत प्राचीन और सौहार्दपूर्ण है। हम सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक रूप से एकजुट हैं, लेकिन भारतीय सांस्कृतिक विरासत आपस में जुड़ी हुई है। भारत में धर्म गुरु महात्मा बुद्ध की पूजा की जाती है, उसी तरह, नेपाल में कृष्ण, पशुपतिनाथ की पूजा की जाती है और परस्पर एक दूसरे के यहाँ धार्मिक यात्रा करते रहते हैं। हमारे धार्मिक ग्रंथ और महाकाव्य एक हैं। इसलिए हमारा रिश्ता इस आधार पर भी मजबूत है। इसे इस प्रकार जाना जा सकता है-

14. सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्र

नेपाल और भारत दुनिया के दो प्रमुख हिंदू धर्मों और बौद्ध धर्मों के विकास के सांस्कृतिक इतिहास का पालन करते हैं। नेपाल प्राचीन काल से ही दुनिया भर के पर्यटकों को आकर्षित करने के बाद से आध्यात्मिकता और दर्शन का केंद्र रहा है। गौतम बुद्ध, जो ऐतिहासिक बौद्ध धर्म को मानते थे, का जन्म नेपाल देश के लुम्बिनी नामक स्थान में हुआ था। लेकिन बुद्ध का सम्बन्ध सारनाथ, वाराणसी, भारत की संस्कृति विरासत से है, जहाँ बौद्ध धर्म का पालन करने वाले पर्यटक एवं आदि पर्यटक आते रहते हैं। बुद्ध वर्तमान भारतीय क्षेत्र में आत्मज्ञान की तलाश में बोधगया आए जहां उन्होंने आत्मज्ञान प्राप्त किया। महात्मा बुद्ध और उनके अनुयायियों ने गया होते हुए बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करते हुए दुनिया के हर कोने में किया। भारत और नेपाल दोनों राष्ट्रों में हिंदू और बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग हैं। रामायण सर्किट की योजना से दोनों देशों के

मजबूत सांस्कृतिक और धार्मिक संबंधों का प्रतीक साबित हुआ। धार्मिक संबंधों की बात करें तो, भारतीय पुराण रामायण में, राम की पत्नी, सीता के पिता, महाराजा जनक, नेपाल के जनकपुर के राजा थे, जो दोनों देशों की संस्कृति को जोड़ती है, इस सांस्कृतिक संबंधों के कारण, अधिकांश भारतीय तीर्थयात्री कपिलवस्तु और लुम्बनीवन में जाते हैं। यह सांस्कृतिक विरासत दोनों देशों की आत्मा के रूप में परस्पर जुड़ी हुई है। सांस्कृतिक और धार्मिक स्थान पशुपतिनाथ मंदिर और मुक्तिनाथ शक्तिपीठ से आस्था जुड़ी हुई है। नेपाल में पौराणिक परंपराओं से जुड़े कई सांस्कृतिक और आध्यात्मिक केंद्र हैं जो दोनों देशों को पर्यटन के रूप में बाधें हुए हैं।

भारत, नेपाल के साथ सास्कृति एवं धार्मिक स्थलों को पर्यटन के रूप में जोड़कर परस्पर एक दूसरे आस्था को बनाए रखने में पूर्ण सहयोग कर रहा है जिसमें रेलवे की पहली बौद्ध सर्किट ट्रेन को अक्टूबर, 2019 से प्रारंभ करने की योजना शुरू कर दी गयी है जो भारत-नेपाल में चारों ओर प्रसारित गौतम बुद्ध से सम्बद्ध स्थलों जैसे बुद्ध का जन्म स्थली लंबुनी बोधगया, जहाँ बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ, सारनाथ जहाँ बुद्ध ने प्रथम उपदेश दिये एवं कुशीनगर जहाँ बुद्ध ने अपना निर्वाण प्राप्त किया आदि का यात्रा कराएंगी। इस यात्रा से भगवान बुद्ध के अनुयायियों का मानना है कि यह आरंभ होने से अनुयायियों को मोक्ष के प्रति आत्मविश्वास बढ़ेगा और वह एक उत्कृष्ट एवं उच्च पुनर्जन्म को प्राप्त करेंगे। इन दोनों राष्ट्रों की इस श्रद्धा भक्ति से आपसी प्रेम और संस्कृति में मिठास घुलेगा जो सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है।[19]

15. सामाजिक क्षेत्र

भारत-नेपाल संबंधों की सामाजिक सम्बन्ध बहुत प्राचीन है, जो खुली सीमा के पार दोनों देशों के सुगम आवागमन की सुविधा प्रदान करती है। नेपाल एक भू-भाग वाला देश होने के नाते, यह चारों तरफ से कटीले जंगली वनों एवं पहाड़ों से घिरा हुआ राष्ट्र है, जिसका एकमात्र समर्थन अथवा विकल्प भारत है, जो दोनों देशों के नागरिकों की आजीविका का साधन है जो भारतीय सीमा में विना रोक-टोक प्रवेश करने से, व्यापार एवं रोजगार

का साधन बनता है, यह सुविधा भारत और नेपाल की 1950 की संधि के अन्तर्गत आता है जो एक-दूसरे के देश में बस सकते हैं और वैवाहिक संबंध स्थापित कर सकते हैं, जो एक परिवारिक रिश्ते की मजबूत नीवं बनाते हैं और परस्पर एक-दूसरे के राष्ट्र में इस नीवं को "रोटी-बेटी के रिश्ते" का नामकरण किया गया है।

16. आर्थिक क्षेत्र

नेपाल भारत और चीन के बीच स्थित है जिसमें भारत की तीन सीमाएँ नेपाल को छूती हैं जबकि चीन की एक सीमा आसन्न है। नेपाल पूरी तरह से भारत पर निर्भर है क्योकि उसका कोई समुद्री बंदरगाह नहीं है। भारत सदियों से नेपाल को वित्तीय सहायता प्रदान करता रहा है। भारत नेपाली आर्थिक भागीदारी और विदेशी निवेश का सबसे बड़ा स्रोत है। 1950 के व्यापार और संधि के तहत अन्य देशों के साथ व्यापार करने के लिए भारत और नेपाल को पारगमन सुविधा और कोलकाता बंदरगाह भी प्रदान किया गया है। एक-दूसरे के देश में एक-दूसरे से आगे बढ़ने वाली भारतीय कपंनियों ने नेपाल में अपने उद्योगों को बढ़ावा देकर रोजगार के साधन बनाए हैं। इन कंपनियों की कई आर्थिक सेवा क्षेत्रों में भारत की उपस्थिति है, विनिर्माण क्षेत्र में सहायक परियोजनाओं, नेपाल में पर्यटन और नेपाल में प्राकृतिक खनन।

17. नेपाल का कला साहित्य एवं शिक्षा का भारत से सम्बन्ध

वर्तमान में, भारत में 179 भाषाएं और 544 उप-भाषाएं हैं, जिसमें बाईस भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में 'राजभाषा' का दर्जा दिया गया है, जिनमें से एक नेपाली भाषा भी है जो 19वीं राजभाषा के रूप में शामिल है। हर साल साहित्य अकादमी भारतीय नेपाली साहित्यकारों द्वारा लिखित नेपाली भाषा साहित्य और नेपाली भाषा में अनुवादित साहित्य को प्रोत्साहित और पुरस्कृत करती है। नेपाली भाषा के साहित्य का भारतीय साहित्य में विशेष योगदान है। जिस तरह पशुपतिनाथ को देखे बिना सभी हिंदुओं का सारा तीर्थ निरर्थक है, उसी तरह भारतीय साहित्य भी नेपाली भाषा के साहित्य के बिना अधूरा है।

प्राचीन काल से, नेपाल और भारत की भाषा, कला, साहित्य और संस्कृति में बहुत समानताएं हैं। नेपाल एक बहुभाषी देश है। इसलिए नेपाल में भी हिंदी का प्रचलन है। भारतीय सीमा के पास नेपाल के तराई क्षेत्र में हिंदी बोलने वालों की बहुतायत है। नेपालगंज, वीरगंज, महेंद्रनगर, जनकपुर आदि को नेपाल का हिंदी भाषी क्षेत्र माना जाता है। भारत के विभिन्न शहरों में रोजगार, शिक्षा और उपचार के लिए नेपाली आने के कारण हिंदी भाषा नेपाल के पर्वतीय क्षेत्रों में पहुँच गई। हिंदी सिनेमा और हिंदी गाने भी इसमें बहुत योगदान देते हैं। नेपाली भाषा में हिन्दी साहित्यकारों जैसे शरतचंद उपाध्याय, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय, रवींद्र नाथ टैगोर, निर्मल वर्मा, केदारनाथ सिंह, अरुण कमल, आर.के. नारायण, हरिवंश राय बच्चन, आदि ने अपना योगदान दिया। हिंदी और नेपाली दोनों भाषाओं को समान रूप से प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। इसी तरह, नेपाल से प्रकाशित होने वाली एक पत्रिका, हिमालिनी 'एक हिंदी पत्रिका है जो लगातार बाईस वर्षों से प्रकाशित होती रही है। पंडित दीप साहित्य परिषद नेपाल में हिंदी भाषा के प्रचार के लिए काम कर रही है। काठमाडूं में नेपाल-भारत पुस्तकालय भी हिंदी के प्रचार और नेपाली लेखकों के साथ भाषा के समन्वय के लिए उल्लेखनीय कार्य करता है। राजनीतिक मामलों में भी नेपाल में हिंदी भाषा को लेकर बहुत विवाद रहा है। एक समय था जब नेपाल में हिंदी को नेपाल की दूसरी अधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने की पहल की जा रही थी, लेकिन राजनीतिक विवादों के कारण इसे अस्वीकार कर दिया गया था।

संदर्भ-ग्रन्थ-सूची

1. Pounds N.G. : Political Geography, 1963, p. 12
2. सतीश चन्द्र मित्तल, स्वामी विवेकानन्द तथा नारी सम्मान, पांचजन्य, 6 मई 2012
3. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, 'उर्मिला' काव्य।
4. Alexender M. Lewis : World Political Patters, 1956, p. 1
5. Frederick H. Gaige, Regionalism and National unity in Nepal, p. 26-27

6. वी. ऐ. स्मिथ, अशोक, द बुद्धिस्ट एम्परर आफॅ इंडिया, प्रथम संस्करण 1901, भारतीय संस्करण, बलुन्दशहर, 1981, पृ. 70-71

7. वी. ऐ. स्मिथ, अशोक, द बुद्धिस्ट एम्परर ऑफ इंडिया, प्रथम संस्करण 1901, भारतीय संस्करण, बलुन्दशहर, 1981, पृ. 70-71

8. राधाकृष्ण चौधरी, प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पटना, 1989, पृ. 239

9. राधाकृष्ण चौधरी, प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पटना, पृ0308

10. BC news 25 April, 2015

11. प्रतियोगिता दर्पण, जुलाई, 2007, पेज, 2160

12. डॉ0 पुष्पेश पंत एवं श्री लाल जैन, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ 2007, पेज नं. 490

13. Tony Hagan : Nepal : The Kingdom in the Himalayas 1961, p. 97 .

14. www.jagranjosh.com/general-knowledge/भारत-के-पड़ोसी-देशों-व-स्थलीय-सीमा-रेखाओं-के-नाम 1459318192.2

15. John whelpton, A History of Nepal, p. 312

16. बी.सी. उप्रेती, नेपाल डाइलेमाज ऑफ डवलपमेंट एण्ड चेंज इन फॉर वेर्स्टन

17. जान रोलेण्ड - ए हिस्ट्री ऑफ इण्डो चाइना रिलेशन, पृ0 146

18. लूसियानो पेटेच मेडिवल हिस्ट्री ऑफ नेपाल (1750-1480)

19. नवभारत टाईम्स, 17 अक्टूबर, 2019

नमूना SAMPLE

अध्याय

2

भारत-नेपाल सम्बन्धों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत-नेपाल संबंधों का ऐतिहासिक विश्लेषण प्राचीन काल से चला आ रहा है, जो अटूट एवं मधुर संबंध को दर्शाता है, जो इन दोनों राज्यों को भौगोलिक, धार्मिक और सांस्कृतिक एकरूपता में बाधें रखा है। नेपाल में भारत की रुचि धार्मिक, ऐतिहासिक और सामरिक कारणों से स्वाभाविक थी। दोनों देशों के बीच वैचारिक और व्यावहारिक संबंधों की एक लबीं श्रृंखला है, जिसने इन दोनों राष्ट्रों की राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर भौगोलिक रूप से निश्चित और राजनीतिक रूप से परिभाषित होने के लिए संप्रभुता की धारणा को भी अनुमति नहीं दी। भारत और नेपाल के बीच 1751[1] किलोमीटर लबीं सीमा निर्बाध है, जो आसानी से दोनों राष्ट्रों के बीच बिना वीजा के सुगमतापूर्वक आवागमन किया जा सकता है।

भारत-नेपाल संबंध प्राचीन काल से अटूट एवं प्रगाढ़ रहे हैं। नेपाल राष्ट्र न कवेल भारत का पड़ोसी मित्र देश है, न ही यह भारत और चीन के बीच एक 'बफर' राज्य है, लेकिन दोनों एक परिवार का हिस्सा एवं बड़े-छोटे भाई की तरह व्यवहार करते हैं। देखा जाए तो दोनों राष्ट्रों के ऐतिहासिक, भौगोलिक,

SAMPLE

सांस्कृतिक और सामाजिक संबंध समीपता से जुड़े हुए हैं।[2] हिमालय की दक्षिणी ढलान पर बसा यह एक छोटा सा देश जो 147182 किलोमीटर वर्ग में विस्तृत यह देश जिसकी आबादी में 90 प्रतिशत हिन्दू का तथा 5 प्रतिशत बौद्ध धर्म के है तथा वर्तमान में 2 करोड़ 78 लाख की जनसंख्या वाला देश है।[3] प्रशासनिक दृष्टि से यह 77 जिलों तथा 7 अंचलों में विभाजित है।

(1) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (प्राचीन काल से ब्रिटिश आगमन पूर्व)

दक्षिण एशिया के देशों में नेपाल का एक महत्वपूर्ण स्थान है। उत्तर में हिमालय के आगोश में सिमटा यह छोटा सा देश अपने सामरिक महत्व के कारण भारत के लिए एक विशेष स्थान रखता है। नेपाल को भारत का उत्तरी प्रवेश द्वार कहा जा सकता है।

वैदिक युग से नेपाल भारत से अभिन्न रूप से जुड़ा है। पौराणिक रूप से यह मान्यता है कि निमि नाम के एक मनीषी ने इस क्षेत्र की स्थापना की थी। कालान्तर में इसे 'निमिना पालित राष्ट्र नेपालम्' कहा गया। भारतीय पुराण रामायण में भी जनकपुरी माता सीता का विवाह, अयोध्या के श्री राम के साथ यही सम्पन्न हुआ था। विद्वानों ने भारतीय स्त्री चरित्र को माँ सीता के चरित्र जैसे पवित्र'[4] बताते हुए प्रशंसा भी की है। महाभारत काल में यहाँ के युवाओं ने महायुद्ध में, पांडवों की ओर से भाग लिया था। यही पर महात्मा बुद्ध का लुम्बिनी में जन्म हुआ था। पाँचवी शताब्दी ई0पू0 में काठमाण्डू की सुरम्य घाटी में गोपाल, कीरत, लिच्छवी आदि छोटे-छोटे राज्य थे। चाणक्य ने नेपाल का जिक्र किया है। मौर्य वंश के सम्राट अशोक की एक पुत्री का विवाह नेपाल के पर्वतीय क्षेत्र के एक सम्राट परिवार के व्यक्ति से हुआ तथा उसका साम्राज्य नेपाल तक था।[5] गुप्त शासक समुद्रगुप्त के साम्राज्य में नेपाल का राज्य भी था।[6] हर्षचरित्र से ज्ञात होता है कि उसने किसी लुखारध्वज, पर्वतीय प्रदेश से कर ग्रहण किया था। ऐसा भी माना जाता है कि "नेपाल के राजा ने हर्ष से मित्रता स्थापित की थी तथा उपहार स्वरूप बहुत सा धन भेजा था।"[7] चीनी सूत्रों से ज्ञात होता है कि हर्षवर्धन का समकालीन चीनी तांग शासक ताई सुंग ने दो दूत मण्डल, क्रमशः 643 ई.पू. तथा 647 ई.पू. में भेजे थे। दूसरे दूतमंडल के पहुँचने के समय हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई

थी तथा एक अयोग्य व्यक्ति ने शासन पर कब्जा कर लिया था। उस दूसरे दूतमंडल ने नेपाल तथा असम से एक सेना खड़ी कर हर्षवर्धन के समर्थकों ने उस अयोग्य शासक को पराजित किया था तथा उसकी मदद की थी।[8] 9वीं शताब्दी में प्राकृतिक अड़चनों तथा कठिनाइयों में नेपाल छोटे-छोटे राज्यों में बँट गया था। 878 ई. में नेपाल का तिब्बत से टकराव के बाद नेपाल एक स्वतंत्र देश के रूप में उभरा था। भारत तथा चीन के बीच व्यापार का प्रमुख मार्ग होने से उसकी आर्थिक स्थिति भी सुधरी थी। 11वीं शताब्दी में गुणाकामदेव नामक शासक ने काठमाण्डू, पाटन, शंकु नगरों में निर्माण किया था।[9] उल्लेखनीय है कि पड़ोसी क्षेत्र कश्मीर, 14वीं शताब्दी में तुर्की आक्रमण का शिकार बना जबकि नेपाल में किसी विदेशी शासन का आक्रमण नहीं हुआ और साथ वह इस्लामीकरण से पूर्णतः अछूता रहा। 1559 ई. में एक राजपूत ध्रुवसेन ने यहाँ शाहवंश की स्थापना की। उसने गोरखों के पर्वतीय प्रदशे (काठमाण्डू) के पश्चिम क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। उसके उत्तराधिकारियों ने नेपाल के मध्य क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। आधुनिक नेपाल के जनक महाराजा पृथ्वी नारायण शाह जिन्होनें 1769 ईस्वी में तत्कालीन नेपाल की सभी प्रमुख रियासतों को जीतकर एक सुदृढ़ और एकीकृत नेपाल की स्थापना की और विस्तार किया। वह पिथौरागढ़ भारत के सिसोदिया वंश से संबंधित थे। 1769 ई. में गोरखा राजा पृथ्वी नारायण शाह ने काठमाण्डू पर अधिकार कर तथा वहाँ पर लम्बे समय से रह रहे मल्ल राजाओं को पराजित कर संयुक्त नेपाली साम्राज्य की स्थापना की।

देखा जाय तो प्राचीन काल (10वीं शताब्दी में) वर्तमान गोरखपुर जिले के अन्तर्गत बस्ती, देवरिया, कुशीनगर व आजमगढ़ जिले सम्मिलित थे। राजा, मदन सिंह, गोरखपुर एवं उसके आस-पास के इलाके पर शासन था।[10] प्राचीन भारतीय संस्कृति में महाभारत का विशेष महत्व रहा, जहाँ थारू लोग महाभारत से अपने सम्बन्ध को दर्शाते रहे हैं। डांग घाटी, नेपाल के थारू कृषक अपनी लोक कला में महाभारत जीतने तथा देवताओं का आशीर्वाद पाने में अपनी लोक कला का प्रदर्शन करते रहते हैं व थारू नृत्य महाभारत की घटनाओं का प्रहसन (प्रसन्नतापूर्वक) प्रदर्शित करते हैं। जहाँ विभिन्न प्रकार के गानों का अंग्रेजी अनुवाद किया जा चुका है, जो इन गानों में मुख्यतः पांच पाण्डवों

एवं सौ कौरवों के बीच युद्ध की कहानी वर्णित है। 1993 में कुर्ट मेयर एवं पामेला डूयूल नेपाल तराई के अपने रिसर्च ट्रिप में पाया कि महाभारत को ये लोग "बरका नाच" या बड़ा नाच के रूप में प्रदर्शित करते रहे हैं।[11] जिसे पीढ़ी दर पीढ़ी इस परम्परा को उनके वंशजों अर्थात् पुत्रों से प्राप्त होती रहती है। इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि महाभारत को अपनी परम्परा मानने वाले कभी न कभी प्राचीन काल में उससे संबंध रहे होगें। चूँकि क्षत्रिय का 'युद्ध' करना उनका धर्म रहा है, अतएव इन्हें क्षत्रिय माना गया, क्योंकि प्राचीन भारत में भी युद्ध में गीतों का विवरण मिलता है जो कि ज्यादातर क्षत्रिय लोग ही अपने युद्धों की विजय संस्मरणों को याद रखने व अपनी परम्परा व पीढ़ियां खत्म न हो इस हेतु प्रदर्शन किया करते थे। 'राजपूत-आइडियाज अबाउन्ड' आर्टिकल में लेखक ने लिखा है कि राजा थारू पर हुए मानव विज्ञान अध्ययन में देखा गया कि 16 वीं शताब्दी में जब मुगल भारत आये उस समय भारत में उच्च वर्णीय राजपूत थे तब एक मुस्लिम शासक जो कि राजपूत कन्या से विवाह करना चाहता था, जिसके कारण सभी राजपूत स्त्रियाँ एवं बच्चे तराई की ओर प्रवजन कर गये (तराई-भारत, नेपाल सीमा थी) एवं यद्ध लड़ने हेतु समस्त राजपूत पुरुषों को छोड़ गये थे। युद्ध में सभी राजपूत पुरुष मारे गये और तराई में बसी थारू महिलाओं ने अपने उन दासों के साथ विवाह कर लिया जो कि उनके साथ आये एवं युद्ध से बच गये। विद्वानों का दावा है कि राणा थारू महिलाओं ने अपनी उच्च वर्गीय स्थिति एवं शाही वंशावली को बनाये रखा, इस प्रकार वे खुद से अलग थारू बने।[12]

फ्रेंच इतिहासकार सिल्वन लेवी उद्धृत चौधरी, एस. एल. (1999) ने उल्लेख किया है कि अशोक महान समुदाय पिपलीकानन चंपारण में पैदा हुआ था और वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था। इस प्रकार यहाँ वर्णित सभी लेखकों ने एक ही मत व्यक्त किया है कि बुद्ध थारूओं के वंशज थे जो कि तराई एवं आतंरिक क्षेत्र में स्वदेशी लोगों के अग्रणी रहे हैं।[13]

डॉ0 के0 पी0 जायसवाल के अनुसार, थारू लोगों ने नेपाल मे अपना राज्य स्थापित किया और राजनीतिक दृष्टि से देखा जाय तो कम से कम आठ शासकों ने लगभग 350 वर्षो तक शासन किया इन शासकों की सूची और सिंहासनारोहण को उनके वर्षोनुसार निरूपित किया गया है जो निम्नलिखित

है[14]- थुष्ख - 490 ई0 पू0, थुष्क पंचम - 415 ई0 पू0, थुन्क (थुम्म) - 340 ई0 पू0, स्थुन्कों- 265 ई0 पू0, थुर - 215 ई0 पू0, थम्मू - 190 ई0 पू0, थोर - 165 ई0 पू0, थोको - 140 ई0 पू0।

पालि बौद्ध ग्रन्थ दीघ निकाय में 'थुलू'[15] नाम से थारू लोगों का उल्लेख प्राप्त हुआ है। उस काल में उनका एक अलग जनपद था एवं उसकी राजधानी उत्तरका नामक कस्बा था।[16] बौद्ध साहित्य का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि थारू लोग तथागत बुद्ध के अनुयायी बने और बुद्ध के धर्मोप्रदेश का श्रवण कर उनके पथ पर अनुसरण करते गये।

भारत और नेपाल के बीच एकात्मक संबंध के बारे में नेपाल नरेश बीर विक्रम शाहदेव ने कहा था कि 'भारत और नेपाल के बीच संबंध का एकमात्र कारण भौगोलिक समरूपता और सांस्कृतिक साहित्यिक एकता का प्रतीक है जहाँ भारत और नेपाल की भौगोलिक सांस्कृतिक एकता दोनों को लाया गया है।' इन राष्ट्रों के निकट सामाजिक-आर्थिक संबंध निकटता से जुड़ा हुआ है। दोनों देशों के बीच लम्बी दोस्ती के रिश्ते की व्याख्या करता है, जो जब भारत में हिंदी भाषा का विकास हुआ, तो इसका प्रभाव नेपाल में भी देखा गया। नेपाल में विद्यापति, कबीर, सूर, तुलसी, मीरा आदि के पदों का व्यापक प्रचार हुआ। नेपाल के लगभग सभी मंदिरों में लिखित रूप में भारत के इन हिंदी कवियों के पदों का संकलन मौजदू है। नेपाल के भक्त रात में मंदिरों में उन्हीं कवियों के ही श्लोक गाकर कीर्तन-भजन किया करते हैं। संस्कृत की तरह, हिंदी ने भी नेपालियों को आकर्षित किया और इस भाषा ने नेपाल के निवासियों को सदियों से मोहित किया है। नेपाल में हिंदी को 'पक्की भाषा' कहा जाता है। 'जब नेपाल का व्यक्ति साधु और संत बन जाता है, तो उसे हिंदी बोलना आवश्यक हो जाता है। यदि वह नेवारी या नेपाली भाषा में उपदेश देता है, तो उसके उपदेशों को यह कहकर महत्वहीन कर दिया जाता है कि उसका उपदेश पक्की भाषा का नहीं है। यहाँ तक कि उसका भाषण भी उसी पक्की भाषा का होना चाहिए। टूटी-फूटी हिंदी, नेपाल के लोग उनकी शिक्षाओं को एक देवता या एक प्रामाणिक चीज के रूप में मानकर श्रद्धापूर्वक स्वीकार करते हैं।[17] "इतना ही नहीं, नेपाली लेखकों ने हिंदी भाषा

के अलावा कविताओं की भी रचना की है जो नेपाल के निवासियों को हिंदी भाषा के प्रति प्रेम दिखाता है। भारत में नेपाल में, कृष्ण काव्य का निर्माण हिंदी में - जयदेव और विद्यापति के गीतों का नेपाल में कई शताब्दियों तक व्यापक प्रचार हुआ। बाद में, नेपाल में सूरदास के पदों का भी प्रचार हुआ। परिणामस्वरूप, हिंदी में कई लोग ब्रजभाषा में कृष्ण काव्य की हिंदी कविता में रचना कर चुके हैं। नरहरि को नेपाल में हिंदी कृष्ण काव्य का पहला लेखक माना जाता है। नेपाल के बारुत बहादुर श्रेष्ठ, नारायण भक्त, राम अधारदास, मथुरादास साहू और देवनारायण झा ने अपेक्षाकृत अधिक लिखा है, उन्हें यहाँ कृष्णकाव्य का वास्तविक लेखक माना गया है। इन कवियों ने बाल चेष्टाओं, माखन चोरी, गोप सखाओं, यमुनान्तर घेड, गोचरन, पूतना वकासुर वध, वात्सल्य, श्रृंगार वर्णन, विप्रलंभ श्रृंग और विविध लीलाओं का महान मार्मिक वर्णन किया। 'नेपाल की हिंदी कृष्णकाव्य पूरी तरह से हमारी हिंदी कृष्णकाव्य से प्रभावित है। यह कविता खदुरा पदों और गीतों में भी पाई जाती है। नेपाली कवियों ने ब्रजभाषा को कृष्णकाव्य का माध्यम भी बनाया है, लेकिन अष्टछाप के कवियों की कोई भाषा पूर्ण नहीं हुई है और न ही किसी कवि ने सूरदास जैसा सुस्पष्ट श्रृंगार का वर्णन किया है।[18]

नेपाल की विदेश नीति का निर्धारण करते हुए, आधुनिक नेपाल के निर्माता पृथ्वीनारायण शाह ने कहा है कि यह देश दो चट्टानों के बीच खिलने वाले फूल की तरह है। चीनी सम्राट के साथ हमारे दोस्ताना संबंध होने चाहिए और दक्षिणी समुद्र के सम्राट के साथ हमारे संबंध बहुत अच्छे होने चाहिए, लेकिन भारत की अपेक्षा चीन बहुत चतुर हैं। 'नेपाल की भौगोलिक स्थिति ने धर्म, जाति, संस्कृति, समाज, परंपरा और आर्थिक हित आदि को आपस में जोड़ा है। यह इतना मिश्रित हो गया है कि नेपाल का दक्षिणी भाग, यानी तराई और उत्तरी भारत, एक जैसे प्रतीत होते हैं। ऐसी निकटता दो संप्रभु देशों में कठिनाई के साथ देखने को मिलेगी।[19]

जहाँ भारत एवं नेपाल को भौगोलिक स्थिति ने एक सूत्र में बांधे हुए परिलक्षित होती है, वहीं यहाँ की संस्कृति, धार्मिक भावना, भाषा एवं लिपि में भी समानता का भाव प्रकट करता है। भारतीय उपमहाद्वीप के हिमालयी तलहटी में बसे हुए इस देश में मनुष्यों के आगमन का स्पष्ट प्रमाण 9000

ई0पू0 में ही प्राप्त हुआ था।[20] उल्लेखनीय है कि नेपाल की राजधानी काठमाण्डू उपत्यका से नवपाषाण कालीन उपकरण पाये गये हैं जो भारतीय सभ्यताओं के समकालीन हैं।[21] नेपाल में मुख्यत: चार राजवंशों ने मुनि (गोपाल), अहीर, किरात और लिच्छवि ने प्राचीन नेपाल के इतिहास में शासन किया। इनमें से दो अहीर और लिच्छवि राजवंश के अधिपत्य में भारतीय क्षेत्र भी थे। एशिया के दूसरे देशों की भाँति नेपाल से भारत के संबंधों की सजीव एवं सुदृढ़ परम्परा बौद्ध धर्म के प्रवशे के बाद बनी। भगवान बुद्ध अपने शिष्यों के साथ नेपाल गये थे।[22] नेपाल में सर्वप्रथम प्रवेश करने वाली जाति किरात मानी जाती है। इनके राजा जितेदस्ती (520 ई0पू0) के समय भगवान बुद्ध नेपाल गये थे। इनके उपदेशों को सुनकर किरात जाति बौद्ध धर्म का अनुसरण किये। काठमाण्डू से 20 मील पूर्व स्वयंभू पर्वत के पश्चिम 'नमुरा' नामक स्थान पर 'शुच्छाग्र' नामक स्तूप है जिसे बुद्ध की नेपाल यात्रा का स्मारक माना जाता है, यहाँ बुद्ध ने निवास किया था।

उल्लेखनीय है कि नेपाली संस्कृति में भारतीय धर्म एवं देवी-देवताओं से संबंधित कई महत्वपूर्ण सूचनाएँ विद्यमान हैं जो प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक प्रवाहमान हैं। इस प्रकार की कुछ धार्मिक मान्यताओं की सूचना नेपाली की प्राचीन संस्कृत अभिलेखों से मिलता है। जिसमें प्रख्यात आर0 ग्नोली महाशय ने नेपाल से प्राप्त लगभग 89 संस्कृत अभिलेखों को एकत्रित कर प्रकाशित किया। सभी अभिलेख गुप्तकालीन लिपि एवं संस्कृत भाषा में उकेरा (लिखा गया) गया हैं, साथ ही इन्हें किसी न किसी प्रतिमा एवं लिंगादि पर उकेरा (अंकित किया) गया है। इन संस्कृत अभिलेखों में कतिपय संस्कृत के गूढ़ एवं महत्वपूर्ण छन्दों एवं अलकांरों का भी प्रयोग हुआ है, जैसा कि गुप्त शासकों के अभिलेखों में प्रयकुत किया गया है।[23] अध्ययन स्पष्ट है कि अधिकांश लेखों में शिव के लिंग स्वरुप का उल्लेखित है। जो इन अभिलेखों में ज्यादातर देवी-देवताओं का उल्लेख मिलता है, उनमें शिव, विष्णु, इन्द्र के साथ उमा एवं लक्ष्मी की प्रतिमा स्थापित करने का साक्ष्य प्राप्त हुआ हैं। अभिलेखों में शिव तत्व की प्रधानता से स्पष्ट है कि कालखण्ड में शिव एक विशाल पूज्यनीय देवता की तरह स्थापित होकर पूजे जाते थे। नेपाल के लाजनपाट नामक स्थान से 466 ई0 में स्थापित शिवलिंग प्राप्त हुआ है, जो

ज्येष्ठ मास में चतुर्दशी को स्थापित किया गया था।[24] राजा मानदेव द्वारा 491 ई0 में एक अन्य शिवलिंग को स्थापित करने का अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त हुआ है।[25] नेपाल स्थित पशुपति नाथ मंदिर के चारों द्वारों पर विभिन्न काल खण्ड में बने हुए शिवलिंग स्थापित अभिलेख प्राप्त हुआ हैं जो तत्कालीन समाज में शिव की प्रधानता के द्योतक हैं। 400 ई0 में स्थापित श्री पशुपतिनाथ मंदिर शैव धर्म व्यापाक तौर पर अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत है जिसके विषय में एक कथा प्रसिद्ध है। एक पौराणिक कथा के अनुसार भगवान शिव यहाँ पर चिंकारे का रूप धारण कर निद्रा में चल बिराजमान हो गये थे, जब देवताओं द्वारा ढूढां जा सका तो काशी वापस लाने का निरन्तर कोशिश किया तो उन्होनें नदी के दूसरे किनारे पर छलांग लगा दी। ऐसा कहा जाता है कि उस दौरान उनका सींग चार टुकडों में टूट गया था। इसके बाद यहां भगवान पशुपति चतुर्मुख लिंग के रूप में प्रकट होकर दर्शन दिये।[26] कई अन्य रोचक और महत्वपूर्ण दंत कथाएँ प्रसिद्ध हैं। शिव के बाद विष्णु की पूजा का प्रमाण प्राप्त होता है। 467 ईस्वी में स्थापित भगवान विष्णु का विक्रांत रूप मंदिर के पास पाया जाता है। इस प्रतिमा को राजा श्री मानदेव ने बैशाख माह के शुक्ल पक्ष द्वितीया को स्थापित किया था।[27] देवियों में उमा[28] लक्ष्मी[29] आदि का साक्ष्य प्राप्त हुआ है। इसके अलावा कई धार्मिक प्रतीक चिन्ह जैसे- शंख एवं चक्र[30] के साथ ही वृषभ आदि का अंकन इन अभिलेखों के साथ ही प्राप्त हुए है। गौरतलब है कि प्राचीन भारतीय मुद्राओं और अभिलेखों में, इस अवधि में विभिन्न देवी-देवताओं के साक्ष्य पाए जाने लगे, जहां शंख, चक्र, ब्रिषभ[31] आदि का मुद्राओं का अंकन जिलास्तर पर मिलता है जबकि कई हैं। शक-कुषाण काल में मुद्राओं पर अंकित एकाधिक स्वरूप में शिव का मानव रूप अंकित साक्ष्य प्राप्त हुआ है। जिसमें शिव को त्रिशूल और चतुर्भुज के रूप में प्रदर्शित किया गया है। नेपाल में, न केवल देवी-देवताओं की मूर्तियों को स्थापित करने के सबूत मिले हैं, बल्कि पितृसत्तात्मक पूजा करने के लिए, नेपाल के राजा, मांडव, श्रद्धेय और दिव्य रूप से अपने पिता की पूजा करते हैं और अपनी मूर्ति स्थापित करते हैं और इसकी पूजा करते हैं।[32] रामायण के अनुसार, शहर के प्रवेश द्वार के पास देवकुल की स्थापना और उसमें मृत राजाओं की प्रतिमा स्थापित करने का वर्णन है - जिसमें कहा जाता है कि राजा दशरथ